कोकिला का मस्त मटका

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः सुजाता सिंह

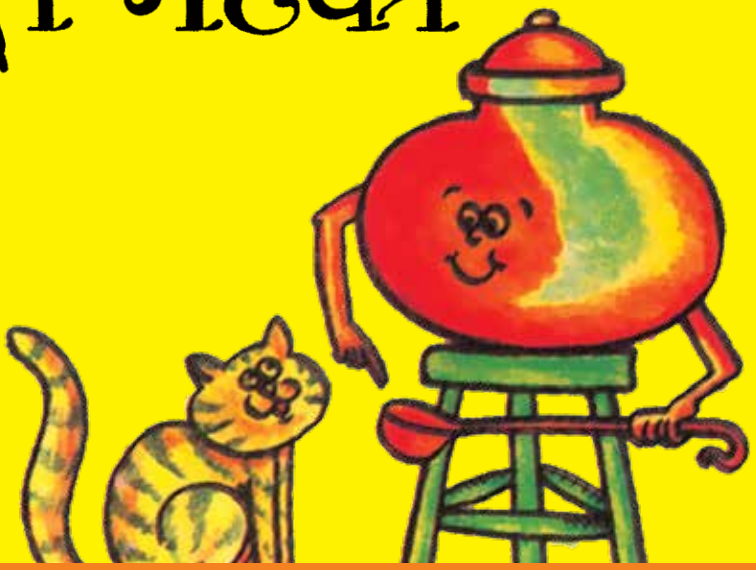

कथा की 300एम थिंकबुक

“आओ, ख़रीदो! आओ, ले जाओ!” अनोखे कुम्हार रामकुमार ने पुकारा।

रामकुमार हमेशा एक ही चीज़ लाता था बेचने के लिए – पर होती थी वह हमेशा निराली!

“याद है उसकी मिट्टी की मुर्गी, जो अंडे देती थी?” मंजरी ने पूछा।

“और उसका मिट्टी
का जादूई हाथी
जिसने हमारे छोटे-से
जंगल को पानी देने
में मदद की थी?”

किसान की बीबी शीबा बोली,
“आज उसके पास जो मटका है
वह मुझे चाहिए।’’

पर इससे पहले कि वह मटका
झपट लेती, मटका कोकिला के
हाथ लग गया।

कोकिला चल पड़ी नदी
की ओर, लोगों के चेहरों
पर थोड़ी-सी जलन देखकर
मुस्काती हुई।

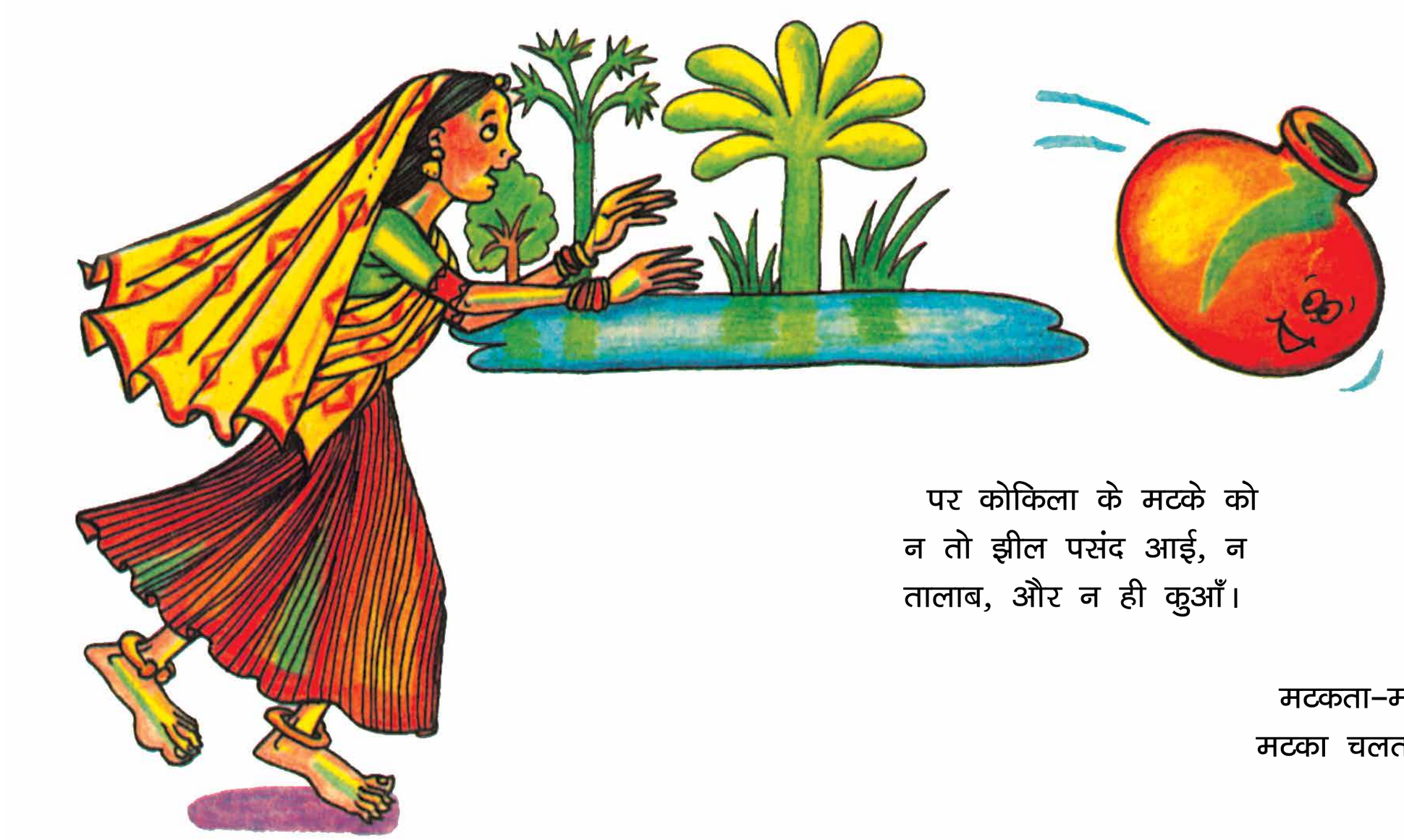

पर कोकिला के मटके को
न तो झील पसंद आई, न
तालाब, और न ही कुआँ।

मटकता–मटकता
मटका चलता रहा।

"ऐई! वापस आ!" कोकिला चिल्लाई और उसके पीछे-पीछे कूदती-फांदती सीधे पानी के नए पम्प तक गई,

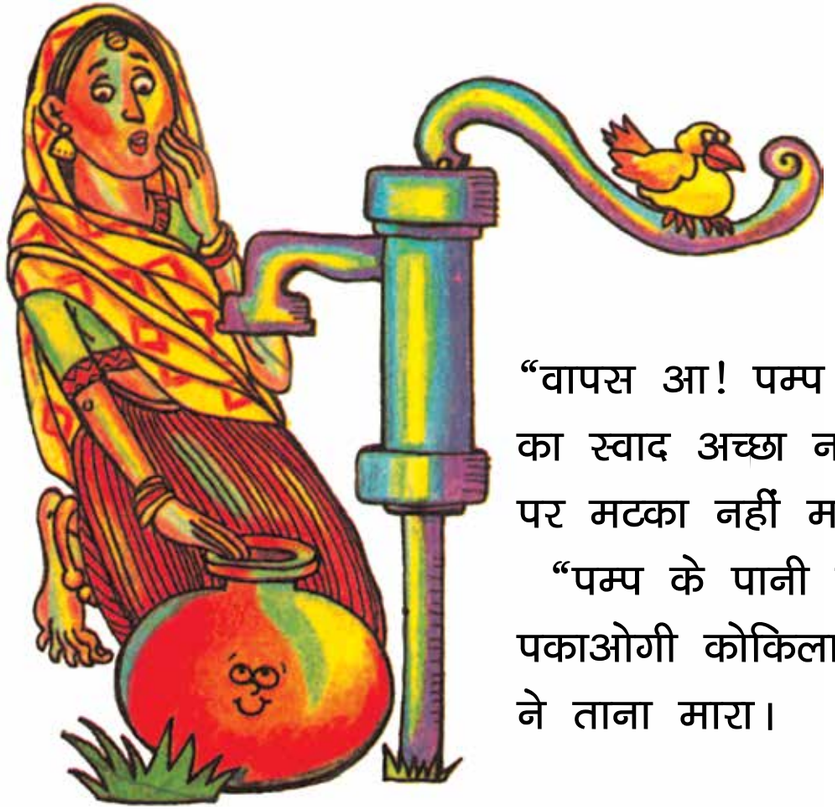

"वापस आ! पम्प के पानी का स्वाद अच्छा नहीं होता!" पर मटका नहीं माना।

"पम्प के पानी से खाना पकाओगी कोकिला?" शीबा ने ताना मारा।

"क्यों नहीं?" कोकिला ने गुस्से से पूछा, "पम्प का पानी तो मेरे परिवार के लिए अच्छा है। दाई भी तो यही कहती है, पर उसकी सुनता कौन है!"

कोकिला मटकती हुई गई और पम्प चलाने लगी।

मटका डोला,
थिरका, नाचा, फिर
गायब हो गया।

वापस आया तो
एक ढक्कन के साथ!

कोकिला के पास हमेशा
ख़ास चीज़ें होती हैं,’’
कमला बुदबुदाई।

कोकिला ने मटके
को गुस्से से देखा,
पर मटका तो बैठा
था मस्त मुस्काता।

जब कोकिला ने पानी भर लिया,
तो मटके ने ढक्कन ढका और घर
तक मुस्काता ही रहा।

उसके बाद से, कोकिला
का मटका तो जैसे घर का
मालिक ही बन बैठा!

उसके पति रामू को
यह बात बिल्कुल अच्छी
नहीं लगी कि, कोकिला
मटके के इर्द-गिर्द नाचे।

और फिर मटके को
कितनी चीज़ें चाहिए थीं ...
बैठने के लिए एक चौकी,
एक लम्बे हत्थेवाला प्याला,

साफ़ हाथ ...

यही नहीं, कोकिला को हर दिन मटके को धोकर धूप में सुखाना भी पड़ता था।

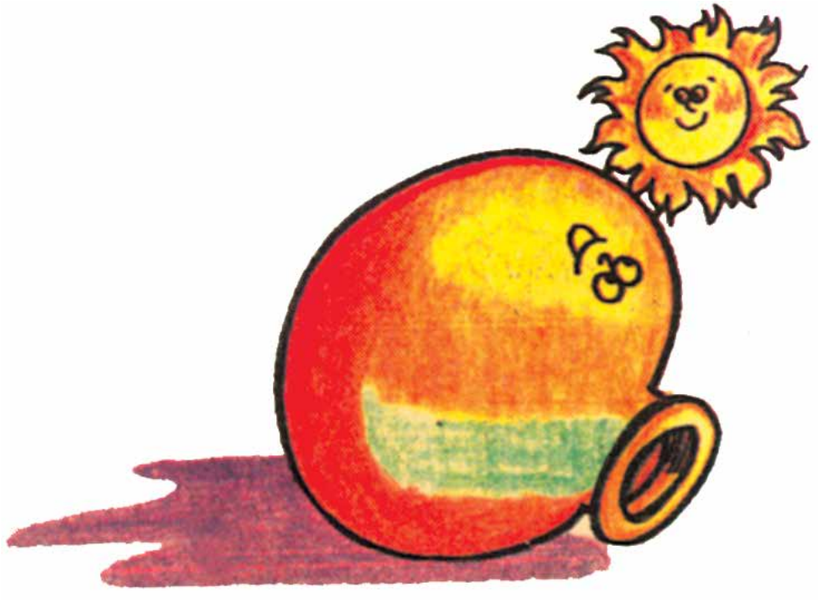

फिर एक दिन कोकिला का पति रामू, अपने गंदे हाथ मटके में डालने ही वाला था कि ...

मटका उसके हाथ से छिटक कर दूर चला गया।

"तुम ... तुम!" रामू ने गुस्से-से कहा।

उसने मटका उठाया और इससे पहले कि कोकिला उसे रोक पाती, मटके को ज़मीन पर पटक दिया!

कोकिला बहुत रोई।

"एक साल से, जबसे यह मटका आया है, गुड्डी एक बार भी बीमार नहीं पड़ी! हाय ... अब मैं क्या करूँगी?"

उस रात कोकिला को एक अनोखा सपना आया। सपने में उसे मटका दिखा। मटके ने कहा,

“कोकिला मैं कोई जादुई मटका नहीं था! अगर तुम मटके की ठीक से देखभाल करो, तो कोई भी मटका गुड्डी को स्वस्थ रख सकता है।”

“कैसे ?” कोकिला ने हैरान होकर पूछा।

“यदि तुम वही करो जो तुमने मेरे लिए किया था,” मटके ने जवाब दिया।

कोकिला मुस्काई “मुझे तुम्हारी याद आएगी,” उसने धीरे से कहा, “मैं तुम्हें धन्यवाद कैसे दूँ?”

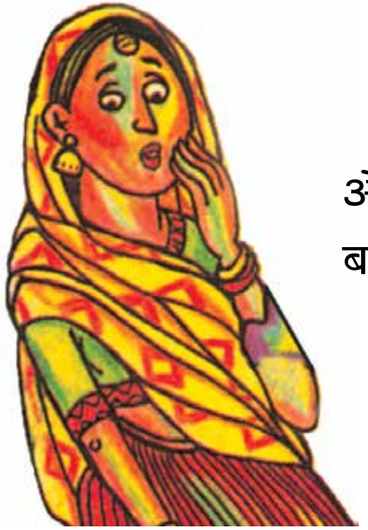

“सभी गाँव की औरतों को इसके बारे में बताकर,”

मटके ने कहा और धीरे–धीरे आँखों से ओझल हो गया।

आज, कोकिला का गाँव, ज़िले का सबसे स्वस्थ गाँव है।

क्या तुम बता सकते हो क्यों?

थोड़ी जानकारी, थोड़ा मज़ा!

क्या तुमने कभी सोचा है कि, हम जो पानी पीते हैं वह कहाँ से आता है?

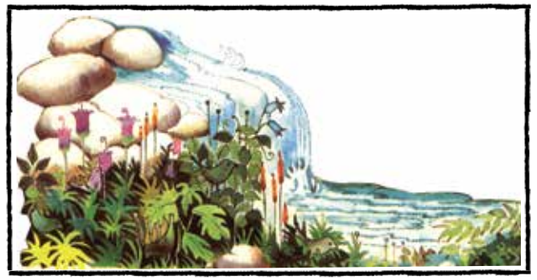

झरनों से

नदियों से

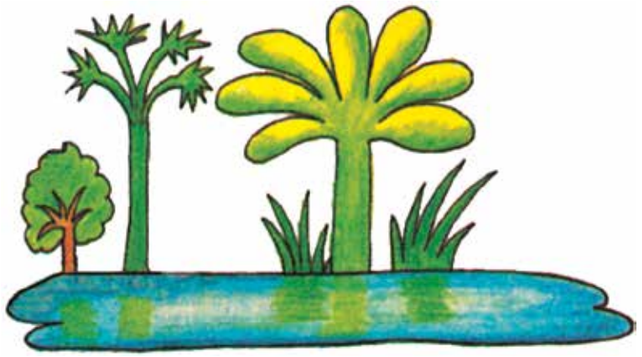

तालाबों से

हैंडपम्प से

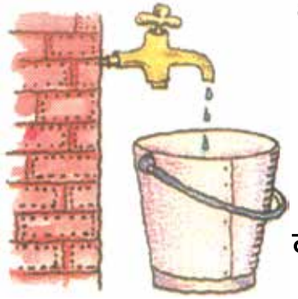

कुओं और नल से भी!

चित्राँकनः जय एवं वंदना बिष्ट

जल चक्र

इसकी गर्मी से
तपते हैं जल स्रोत

सू		

नन्हीं नन्हीं बूंदों
के संग्रह हैं ये

बा					

गर्म हुए पानी से
निकलती है ये

भा				

V					

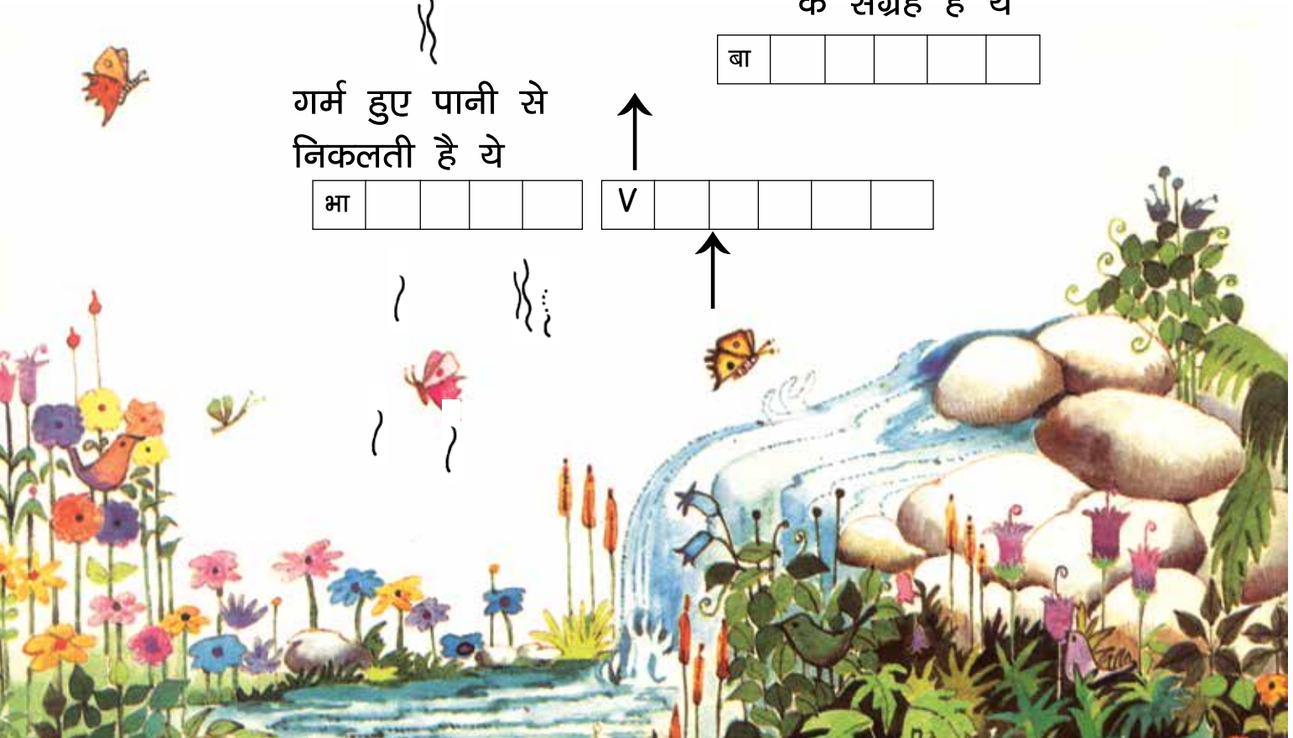

भारी हो जाते हैं
जब पानी से ये

फिर गिरती है
रिमझिम धरती पर

व			

और हो जाते हैं फिर
लबालब, जल संग्रह।

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

सुजाता सिंह चित्रकारी करती हैं और दृश्य कला भी पढ़ाती हैं। उन्होंने डिजाइनर और चित्रकार के तौर पर बच्चों की कई किताबों के लिए चित्रकारी की है। उनके काम की प्रदर्शनियाँ भारत में और विदेशों में भी हुई है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 1994, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

FOR OUR BOOKS

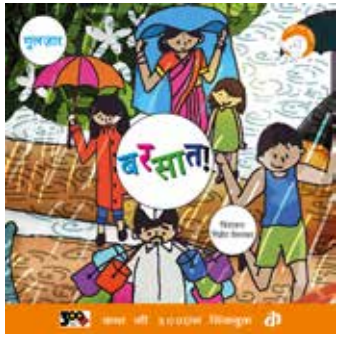

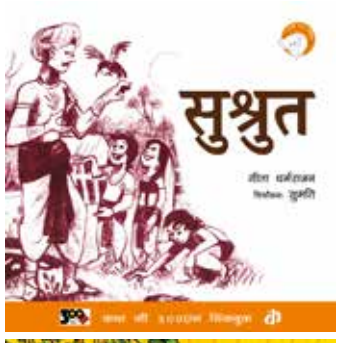

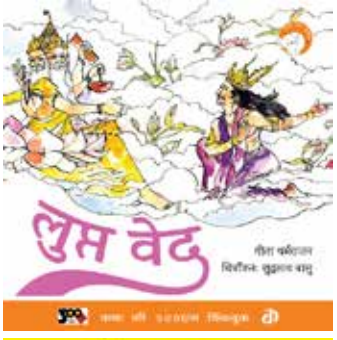

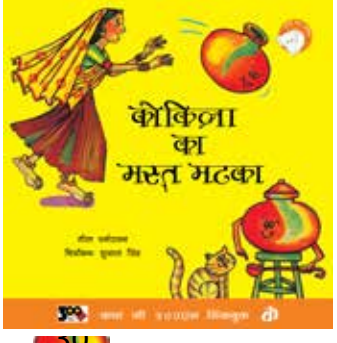

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी ऑरेंज श्रृंखला में